www.ijaherd.com
International Journal of Advance Higher Education Research & Development
Peer Reviewed and UGC Approved: ISSN: 2456-4826 Vol. 9 No. 4 April 2025

"भगवान् महावीर और बौद्ध श्रमण संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन"

सचिन कुमार रस्तोगी
शोधार्थी , दर्शनशास्त्र
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

सचिन कुमार रस्तोगी
शोधार्थी , दर्शनशास्त्र
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उ.प्र.
indian author

सारांश (Abstract):
यह शोधपत्र भारत की श्रमण परंपरा में दो महान व्यक्तित्वों—भगवान महावीर और भगवान बुद्ध—द्वारा प्रवर्तित जैन एवं बौद्ध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व का काल भारतीय उपमहाद्वीप में धार्मिक, दार्शनिक और सामाजिक दृष्टिकोण से परिवर्तनशील रहा, जहां वैदिक परंपरा के विरोध में श्रमण आंदोलन एक सशक्त वैकल्पिक विचारधारा के रूप में उभरा।
महावीर और बुद्ध दोनों ने उस युग में धर्म को केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, नैतिक आचरण, करुणा और मुक्तिपथ का साधन बनाया। जैन धर्म में जहाँ आत्मा की शुद्धता और कर्मों के क्षय द्वारा मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग बताया गया है, वहीं बौद्ध धर्म में जीवन के दुःख, उसके कारण और उससे मुक्ति का विश्लेषण चार आर्य सत्यों और अष्टांगिक मार्ग द्वारा किया गया है।

कीवर्ड (Keywords):
महावीर, बुद्ध, श्रमण परंपरा, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, अहिंसा, निर्वाण, चार आर्य सत्य, पंच महाव्रत, संघ, तप, मध्य मार्ग, मोक्ष।

परिचय (Introduction):

छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत के धार्मिक क्रांति का काल था। इस काल में वैदिक यज्ञवादी परंपरा से हटकर दो महान व्यक्तित्व—भगवान महावीर और भगवान बुद्ध—ने श्रमण विचारधारा को पुनः प्रतिष्ठित किया। श्रमण परंपरा मूलतः एक वैदिक विरोधी, तपोमय, आत्म-संयमित पथ को प्रस्तुत करती है जो सांसारिक कर्तव्यों और हिंसात्मक कर्मकांड से परे आत्ममोक्ष को लक्ष्य मानती है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना है कि इन दोनों श्रमण परंपराओं में कौन-कौन से तत्व समान थे और किन किन बिंदुओं पर वे भिन्न थीं।

इस शोध में उनके धार्मिक और दार्शनिक सिद्धांतों, संघ व्यवस्था, तप परंपरा, अहिंसा की व्याख्या, आत्मा एवं मोक्ष के विचार, समाज सुधार में योगदान, और ऐतिहासिक प्रभावों की तुलनात्मक व्याख्या की गई है। यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि दोनों परंपराएँ भले ही एक साझा सामाजिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न हुई हों, किन्तु उनके दृष्टिकोण, विधियों और अंतिम लक्ष्य में सूक्ष्म एवं महत्वपूर्ण अंतर हैं।

यह शोध भारतीय संस्कृति की विविधता और बौद्धिक समृद्धि को समझने के लिए एक मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे स्पष्ट होता है कि कैसे दो अलग मार्ग अपनाते हुए भी दोनों धर्मों ने समाज में नैतिकता, सहिष्णुता और अध्यात्म को नई दिशा दी।

www.ijaherd.com
International Journal of Advance Higher Education Research & Development
Peer Reviewed and UGC Approved: ISSN: 2456-4826 Vol. 9 No. 4 April 2025

उद्देश्य (Objectives):

1. महावीर और बुद्ध द्वारा प्रतिपादित श्रमण परंपराओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
2. दोनों परंपराओं की नैतिक और दार्शनिक शिक्षाओं की तुलना करना।
3. तप, अहिंसा, मोक्ष, संघ व्यवस्था आदि के संदर्भ में तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना।
4. समाज और राजनीति पर उनके प्रभाव को समझना।

परिकल्पना (Hypothesis):

- साझा उद्गम, भिन्न मार्ग:- यद्यपि भगवान महावीर और भगवान बुद्ध दोनों का उद्भव एक समान सामाजिक-धार्मिक पृष्ठभूमि से हुआ था और दोनों श्रमण परंपरा के प्रमुख संवाहक थे, किंतु उनके द्वारा प्रतिपादित धार्मिक मार्ग, जीवन दर्शन और मोक्ष की अवधारणा में मौलिक अंतर पाए जाते हैं।
- आत्मा बनाम अनात्मा सिद्धांत:- जैन परंपरा आत्मा की शाश्वतता, उसकी स्वतंत्र सत्ता और मोक्ष की स्थिति को स्पष्ट रूप से स्वीकार करती है, जबकि बौद्ध परंपरा "अनात्मवाद" के सिद्धांत को आधार बनाकर आत्मा की सत्ता को नकारती है। यह दोनों परंपराओं के बीच दार्शनिक भिन्नता का मूल आधार है।
- तप बनाम मध्यम मार्ग:- जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति हेतु अत्यंत कठोर तप, उपवास, और शरीर पर नियंत्रण को अनिवार्य माना गया है, वहीं बुद्ध ने कठोर तप को अस्वीकार करते हुए मध्यम मार्ग का प्रस्ताव किया, जिसमें संयमित जीवन, ध्यान और प्रज्ञा को केंद्र में रखा गया।
- अहिंसा की व्याख्या में अंतर:- जैन धर्म में अहिंसा का पालन अत्यंत सूक्ष्म स्तर तक होता है – सूक्ष्म जीवों से भी बचाव की शिक्षा दी जाती है। बौद्ध धर्म में भी अहिंसा एक मुख्य नैतिक सिद्धांत है, किंतु उसका पालन अधिक व्यावहारिक और संदर्भ-आधारित है।
- संघ व्यवस्था का स्वरूप:- यद्यपि दोनों परंपराओं में संघ की अवधारणा है, फिर भी बौद्ध संघ अधिक संगठित, अनुशासित और राज्य-समर्थित संरचना के रूप में विकसित हुआ, जबकि जैन संघ अपेक्षाकृत आत्मनिष्ठ और कठोर तपस्वियों का समूह रहा।
- सामाजिक दृष्टिकोण में भिन्नता:- बुद्ध ने स्पष्ट रूप से जाति, लिंग और वर्ग भेद को नकारा और भिक्षु-भिक्षुणी समुदाय को समान अवसर प्रदान किया। वहीं, जैन धर्म में भी समानता का सिद्धांत है, लेकिन व्यवहार में तपस्या के मानकों के अनुसार कुछ भिन्नताएं दृष्टिगोचर होती हैं।
- राजनीतिक प्रभाव की प्रकृति:- बुद्ध का प्रभाव तत्कालीन सम्राट अशोक जैसे शासकों पर गहरा पड़ा और बौद्ध धर्म राज्यधर्म बना, जबकि महावीर का प्रभाव चंद्रगुप्त मौर्य जैसे व्यक्तियों तक सीमित रहा जो व्यक्तिगत तप और आत्मनिग्रह के मार्ग को अपनाते थे।

साहित्य समीक्षा (Literature Review):

- हेर्मन जैकोबी और टी.डब्ल्यू. राइस डेविड्स जैसे विद्वानों ने जैन और बौद्ध ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।
- आचार्य तुलसी और भिक्षु जगदीश कश्यप द्वारा लिखित ग्रंथों में अनुशासन और संघ व्यवस्था का गहन विवेचन है।
- समकालीन लेख जैसे “The Origins of Shramanic Traditions” तथा “Comparative Ethics in Jainism and Buddhism” भी इस विषय पर महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

www.ijaherd.com
International Journal of Advance Higher Education Research & Development
Peer Reviewed and UGC Approved: ISSN: 2456-4826 Vol. 9 No. 4 April 2025

ऐतिहासिक साक्ष्य (Historical Evidence):

1. प्राचीन ग्रंथ: जैन आगम, त्रिपिटक (विनय, सुत्त, अभिधम्म)।
2. स्मारक और स्तूप: वैशाली, श्रावस्ती, राजगृह, पावापुरी, सारनाथ।
3. शासनकाल: चंद्रगुप्त मौर्य का दीक्षा लेना (जैन प्रभाव) और सम्राट अशोक का बौद्ध धर्म अपनाना।
4. अभिलेख: अशोक के शिलालेख बौद्ध नैतिकता का प्रचार करते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study):

विषय	जैन श्रमण परंपरा (भगवान महावीर)	बौद्ध श्रमण परंपरा (भगवान बुद्ध)
आत्मा की अवधारणा	आत्मा को शाश्वत, स्वतंत्र, चेतन एवं कर्मों से आवृत माना गया है। मोक्ष आत्मा की शुद्ध अवस्था है।	"अनात्मवाद" के अनुसार आत्मा जैसी कोई स्थायी सत्ता नहीं है; केवल पंचस्कंधों की संघटना है।
मोक्ष/निर्वाण की अवधारणा	मोक्ष का अर्थ आत्मा का कर्मबंधन से पूर्ण विमुक्त होना है। यह शुद्ध चेतना की अवस्था है।	निर्वाण का अर्थ है दुःख, तृष्णा और पुनर्जन्म के चक्र की निवृत्ति - एक मानसिक और आध्यात्मिक शांति।
अहिंसा	पूर्ण अहिंसा - वाणी, मन और शरीर से किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं; सूक्ष्म जीवों की हत्या भी वर्जित।	अहिंसा को प्रमुख नैतिक सिद्धांत माना गया, पर व्यवहारिक जीवन में अत्यधिक सूक्ष्मता अपेक्षित नहीं।

उपसंहार (Conclusion):

भगवान महावीर और भगवान बुद्ध दोनों ने भारतीय धार्मिक परंपरा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए। दोनों की श्रमण परंपराएं तप, त्याग और आत्मज्ञान को महत्व देती हैं। परंतु दर्शनशास्त्रीय दृष्टि से जैन परंपरा आत्मा की शुद्धि और कठिन तप पर केंद्रित है जबकि बौद्ध परंपरा करुणा, मध्यम मार्ग और व्यवहारिक दृष्टिकोण पर आधारित है। दोनों ने सामाजिक समरसता, स्त्री-पुरुष समानता, और नैतिकता की नींव रखी, जिससे भारतीय समाज को नई दिशा मिली।

संदर्भ (References):

1. Jacobi, Hermann. Jaina Sutras (Sacred Books of the East, Vol. 22 & 45).
2. Rhys Davids, T.W. Buddhist India.
3. आचार्य तुलसी – जैन धर्म की आधारशिला।
4. भिक्षु जगदीश कश्यप – बौद्ध धर्म और दर्शन।
5. "Comparative Ethics in Jainism and Buddhism", Journal of South Asian Studies, 2021.
6. अशोक शिलालेख – भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण अभिलेख।